अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री-चेतना के स्वर

अंकिता वशिष्ठ
शोधार्थी हिन्दी विभाग
महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय कुम्हेर, (भरतपुर) राजस्थान

महिलाओं के लिए दोहरा मापदंड बहुत दमनकारी हो सकता है। यह उन्हें अपनी पूरी क्षमता हासिल करने से रोक सकता है और इससे हीनता की भावना पैदा हो सकती है। कई हिंदी उपन्यास दोहरे मानक और महिलाओं के जीवन पर इसके प्रभाव का पता लगाते हैं।

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के सामने एक और चुनौती अवसरों की कमी है। महिलाओं को अक्सर शिक्षा, रोजगार और अन्य संसाधनों तक पहुंच से वंचित रखा जाता है। इससे महिलाओं के लिए अपने लक्ष्यों को हासिल करना बहुत मुश्किल हो सकता है।

कई हिंदी उपन्यास महिलाओं के लिए अवसरों की कमी और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव की पड़ताल करते हैं। "ये उपन्यास अक्सर दिखाते हैं कि कैसे महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए मजबूर किया जाता है और वे अपने सामने आने वाली चुनौतियों से कैसे पार पा सकती हैं"।[1]

हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना का भविष्य उज्ज्वल हैं। महिलाओं के आंतरिक जीवन और अनुभवों का पता लगाने वाले उपन्यासों का चलन बढ़ रहा है। ये उपन्यास अक्सर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और रूढ़िवादिता को चुनौती देते हैं, और ये महिला पहचान के बारे में अधिक सूक्ष्म और जटिल दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

ये उपन्यास महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये हिंदी साहित्य के लिखे और पढ़े जाने के तरीके को बदलने में मदद करते हैं। वे समाज में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में भी मदद करते हैं।

[1] शुक्ला, मधु. *रांगेय राघव का कथा साहित्य और समकालीन समाज*, नवल पब्लिकेशन, 2019।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

विकसित देशों में स्त्रियों को प्रगति और उन्नति के जितने अवसर मिलते हैं उतने अवसर विकासशील देशों नहीं मिल पाते यही कारण है कि वहाँ की स्त्रियाँ जागरूक और चौतन्य होती हैं अपेक्षाकृत भारतीय स्त्रियों के । भारत में पितृसत्तात्मक समाज होने के कारण यहाँ स्त्रियों की स्थिति सदैव पुरुषों से खराब रही है क्योंकि यहाँ पुरूष ही सम्पत्ति और परिवार का स्वामी होता है। स्त्री सदैव पुरूष की दासी के रूप में ही रही है।

वैदिक युग में भारतीय स्त्रियों की स्थिति काफी अच्छी थी, वह पुरुष के समान स्वतन्त्र थी । उसे विद्याध्ययन का अधिकार ही नहीं वरन् विवाद, सम्पत्ति आदि पर भी पुरूषों के समान ही अधिकार प्राप्त थे । विवाहित स्त्री का समाज में बड़ा ही सम्मान था । "कोई भी धार्मिक कार्य पत्नी की अनुपस्थिति में पूर्ण नहीं माना जाता था और जिस परिवार में स्त्री नहीं होती थी उसे जंगल की संज्ञा दी जाती थी"।[2] अथर्ववेद में स्त्री को घर की साम्राज्ञी की संज्ञा दी गई हैं, उसे परिवार की संचालिका कहा गया है, परिवार के सभी सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। यजुर्वेद में तो स्त्री के उपनयन और संध्या संस्कार का भी उल्लेख किया गया है। इस युग में स्त्री पूर्णतया स्वतंत्र एवं सम्माननीय थी। इस युग में स्त्री की सामाजिक स्थिति सम्माननीय थी। न तो इस युग में पर्दा प्रथा थी और न ही विधवा-विवाह पर रोक। इस युग में बाल विवाह का प्रचलन नहीं था, विवाह के सम्बंध में स्त्री को काफी स्वतन्त्रता प्राप्त थी, लेकिन इससे यह नहीं समझना चाहिए कि परिवार में पुरूषों का कोई स्थान और महत्व ही नहीं था । पुत्र का जन्म सदैव उच्च और पुत्री का जन्म निम्न माना जाता था।

इसके पीछे यह मान्यता थी कि पुत्र ही विभिन्न संस्कार को पूर्ण करता था वही ऋणों से उऋण कर सकता था । परिवार में पुत्र की ही कामना की जाती थी और पुत्र प्राप्ति के लिए विभिन्न अनुष्ठान भी किये जाते थे इसके विपरीत पुत्री जन्म के लिए कोई भी अनुष्ठान नहीं होता था । वैदिक - शिक्षा स्त्रियों के लिए भी थी। उन्हें पढ़ने लिखने की स्वतंत्रता थी । डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी लिखते हैं कि, वैदिक शिक्षा स्त्रियों के लिए भी खुली थी ।

---

[2] सक्सेना, रीता. *हिंदी उपन्यासों में नारी चरित्र और संघर्ष*, साहित्य भारती, 2023।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ यज्ञ-याग में भाग लिया करती थीं। उनमें से कुछ ने ऋषियों का पद भी प्राप्त किया, जैसे रोमश, विश्ववारा अपाला, घोषा, पौलोमी अथवा सावित्री इत्यादि । ऋग्वेद में उन्हें ऋषिका और ब्रह्मवादिनी कहा गया है। जिस प्रकार हम धन की देवी लक्ष्मी, शक्ति की देवी दुर्गा और विद्या की देवी सरस्वती को मानते हैं उसी प्रकार अदिति, उषा, इन्द्राणी, इला भारती होत्रा, श्रद्धा आदि वैदिक देवियों अनेक तत्वों की अधिष्ठात्री थीं। आर्य लोग अदिति को मित्र, वरूण, रूद्र, आदित्य, इन्द्र, आदि की माता मानते थे। अदिति शब्द का अर्थ हैं बंधन मुक्त, स्वाधीन, अदिति को विश्वहितैषिणी कहा गया है । आर्य लोग नारियों का बड़ा सम्मान करते हैं । महान कवयित्री महादेवी वर्मा अपनी श्रृंखला की कड़ियाँ में लिखती हैं- प्राचीनतम काल में मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाने में, पत्नी पुत्रादि के लिए गृह और उसकी पवित्रता की रक्षा के लिए नियमों का आविष्कार कराने में स्त्री का कितना हाथ था. यह कहना कठिन है, परन्तु उसके व्यक्तित्व के प्रति समाज का इतना आदर और स्नेह प्रकट करना सिद्ध करता है कि मानव समाज की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति उसी से संभव थी । प्राचीन आर्य नारी के सहधर्मचारिणी तथा सहभागिनी के रूप में कहीं भी पुरूष का अंधानुकरण या अपने आपको छाया बना लेने का आभास नहीं मिलता ।

उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा में काफी अन्तर आ गया था । "इस युग में उनकी स्थिति काफी गिर चुकी थी"।[3] इस समय स्त्रियों को शूद्रों के तुल्य समझा जाता था। अब स्त्रियों को पतियों के साथ समूची यज्ञ क्रिया का अधिकार नहीं रह गया था, उनके कुछ कार्य पुरोहित करने लगे थे। आर्यों ने अनार्यों से विवाह करना प्रारम्भ कर दिया था. वे अनार्य स्त्रियाँ यज्ञ कार्य को ठीक ढंग से सम्पादित नहीं कर पाती थीं अतः शास्त्रकारों ने उनसे यह अधिकार छीनने के लिए उन्हें शूद्रों के समान वेदों का अनाधिकारी बताया।

अब बाल विवाह भी होने लगे थे। इस युग में हमें सर्वप्रथम गौतम धर्म सूत्र में यह विचार मिलता है कि स्त्री का विवाह उनके बचपन में ही (अर्थात ऋतुमती होने से पहले ही) कर देना चाहिए

---

[3] श्रीवास्तव, गीतिका. *रांगेय राघव के साहित्य में स्त्री जीवन का चित्रण*, साहित्य निकेतन, 2022।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

। स्त्रियों से दाय का अधिकार भी छीन लिया गया था, फिर भी यह स्थिति सर्वमान्य नहीं थी । इसी युग में गार्गी मैत्रेयी जैसी स्त्रियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त करके पुरुषों की समानता करते हुए उनसे विवाह करने की योग्यता रखी । परन्तु आर्थिक रूप से वे परतंत्र ही रहीं । वेदकालीन स्त्री की स्थिति का वर्णन करते हुए महादेवी वर्मा कहती हैं, वेदकालीन समाज में पुरूष ने नवीन देश में फैलने के लिए संतान की आवश्यकता के कारण और अनाचार को रोकने के लिए विवाह को बहुत महत्व दिया और संतान की जन्मदात्री होने के कारण स्त्री भी अपूर्व गरिमामयी हो उठी ।

उसे यज्ञ जैसे धर्म कार्यों में पति का साथ देने के लिए सहधर्मिणीत्व और गृह की व्यवस्था के लिए गृहणीत्व का श्लाघ्य पद भी प्राप्त हुआ, परन्तु धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से उन्नत होने पर भी आर्थिक दृष्टि से वह नितान्त परतंत्र ही रही । उपनिषद तथा सूत्रकाल में स्त्रियों का स्थान पुरुषों की अपेक्षा कुछ निम्नतर रहा परन्तु घर में उनका सम्मानित स्थान था, उन्हें संगीत, नृत्य तथा आमोद-प्रमोद का पूरा अधिकार था ।

धार्मिक उत्सवों में सधवा स्त्रियों की उपस्थिति आवश्यक समझी जाती थी । धर्मसूत्रों में विधवा स्त्री को अपने पति की सम्पत्ति में अधिकार दिया गया है, इससे यह स्पष्ट होता है कि इस काल तक सती प्रथा का प्रचलन नहीं था । “धर्मसूत्रों में विशेष परिस्थितियों में विधवा विवाह तथा नियोग-प्रथा की भी आज्ञा दी गयी है”।[4]

स्त्री-त्याग के सम्बन्ध में बड़े ही कठोर नियम बनाये गये हैं वशिष्ठ ने कहा हैं, व्यभिचारिणी स्त्री भी यथोचित प्रायश्चित करने पर पवित्र समझी जाती थी और अपने पति द्वारा ग्राहय बन जाती थी । प्रायः सभी सूत्र इस बात पर सहमत हैं कि यदि पिता प्रौढ़ कन्या का विवाह उचित समय पर नहीं करता है तो तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करने के बाद कन्या अपना विवाह स्वयं कर सकती है। इससे इस काल में स्त्री स्वतंत्रता का पता चलता है । महाकाव्य काल में स्त्रियों को प्रतिष्ठित पद प्राप्त था और उन्हें समाज में पर्याप्त स्वतंत्रता थी किन्तु उत्तर वैदिक काल से नारियों की स्थिति में जो ह्रास होना शुरू हुआ था वह इस युग में भी बना रहा। इस युग में स्त्रियों को ऊँची

[4] पाठक, कमल. *हिंदी कथा साहित्य और नारीवादी दृष्टिकोण*, साहित्य संगम, 2021।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

शिक्षा मिलती थी और उन्हें अपना वर चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। भारतीय साहित्य में सती प्रथा का उदाहरण इसी काल से मिलना आरम्भ होता है महाभारत में माद्री पाण्डु के साथ सती हो गयी थीं । बाल-विवाह भी इस थीं। काल में शुरू हो गये थे ।

नारी-विमर्श का प्रारंभ कब हुआ, इसके संबंध में विद्वानों में सुनिश्चित एकमतता नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ, जब पश्चिम में स्त्रियों के मताधिकार और पाश्चात्य संस्कृति में स्त्रियों के योगदान पर चर्चा होने लगी थी। लेकिन वास्तविकता यह है कि स्त्री-विमर्श बीसवीं शताब्दी की देन है। लेकिन अधिकांश विद्वान इस तरह के किसी वर्ष-विशेष को स्त्री-विमर्श का प्रस्थान बिंदु मानना उचित नहीं समझते, क्योंकि बीसवीं शताब्दी में ही इससे पहले भी स्त्री की अलग पहचान, उसके स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की समस्याओं को उठाया जाने लगा था। उदाहरण के लिए, वर्जीनिया वुल्फ ने अपनी पुस्तक ए रूम ऑफ़ वंस ओन लिखा था: ह्वाइटहाल के पास से गुजरते हुए किसी भी स्त्री को अपने स्त्रीत्व का बोध होते ही अपनी चेतना में अचानक उत्पन्न होने वाली दरार को ले कर आश्चर्य होता है कि मानव-सभ्यता की सहज उत्तराधिकारिणी होने पर वह इसके बाहर, इससे परकीय और इसकी आलोचक कैसे हो गयी है।

हिन्दी कहानी साहित्य की लंबी परम्परा में नारी के विविध रूपो तथा उसके संघर्षो का चित्रण मिलता है। नारी को देवी से सहचारिणी माना गया किन्तु उसे पुरुष के समान कभी नही माना गया । समकालीन हिंदी कथाओं के नारी पात्रों का संघर्ष पुरुषों के खिलाफ नहीं बल्कि उस वातावरण के खिलाफ है जिसने वह जीने को मजबूर है जिसे वह बदलना चाहती है । आधुनिक युग की शिक्षित नारी अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व को पहचान अपनी दुर्दशा के प्रति अधिक सजग व सतर्क हो उठी है | समकालीन कथा लेखिकाओं का कथा साहित्य परंपरागत संस्कारों और नवीन जीवन मूल्यों के परस्पर संघर्ष को रेखांकित करता हुआ और उसके कारण उत्पन्न जीवन की विषमताओं विद्रूपताओं व विकृतियों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करता है ।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति बहुत पुरानी है। उसने कई सभ्यता और संस्कृतियों की मार झेली है। साँस्कृतिक इतिहास से पता चलता है कि भारतीय जन मानस ने नवोन्मेष को अपनाने में देर तो अवष्य की है लेकिन उसे बिल्कुल नकारा नहीं है। भक्ति आंदोलन की प्रवृत्ति व आलोच्यकालीन समाज में अज्ञान, अविद्या, रूढ़ि, अंधविश्वास आदिअनेक कुरीतियाँ और कुप्रथाओं का प्रभुत्व था । फिर भी हिन्दी भाषा-भाषी अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य भावना में रंग रहे थे। रूढ़िगत बन्धन

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

ढ़ीले हो रहे थे। कुछ विद्वानों ने ज्ञान- विज्ञान की दूरदर्शिता को समझकर हिन्दी जीवन को उदार बनाते हुए उसके मार्ग को प्रशस्त किया। उनके प्रकाश की रश्मि यद्यपि मध्यम थी ।

हिन्दी भाषा-भाषी नई दिशा की ओर मन्थर गति से अग्रसर थे। डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय लिखते हैं कि- हिन्दी प्रदेश के जीवन सम्बन्धी जिन विविध प्रमुख

प्रमुख पक्षों पर अभी तक विचार किया गया है उससे यह बात बहुत कुछ स्पष्ट हो जाती है कि आलोच्यकाल की बौद्धिक और कलात्मक प्रतिक्रियाओं के पीछे आपस में उल्झी हुई तरह- तरह की शक्तियाँ काम कर रही थी। जीवन की गति दुर्बल, मंद, लड़खड़ाती हुई अनेक प्रकार की कठिनाइयों एवं विघ्न बाधाओं से परिपूर्ण थी। समाज में अपरिवर्तनशील गतिहीन जर्जर पतित व्यवस्था थी । समाज नवीन युग की प्रसव वेदना से ग्रस्त था । यह सक्रांति काल था । नवीन शक्तियों के आगमन से साहित्यिक भाषा खड़ी बोली, गद्य के भावी उज्ज्वल चिह्न दिखाई दे रहे थे। पुरानी दीवारे दरकने लगी नवीन शक्ति तथा विचार अंकुरित हुए । "कला और साहित्य की प्राचीन धरोहर एवं रूचि ने नवीन साहित्यिक भावों, विचारों और रूपों को जन्म दिया।"[5]

आधुनिक युग के साथ-साथ हिन्दी गद्य का आरम्भ और विकास भी शुरू हो गया। समय के विकसित चरणों के साथ - साथ संकीर्णता टूटी और स्वर्णिम भविष्य की किरणें दिखाई दी। औद्योगिक क्रान्ति से विकसित ब्रिटिश शासन कलाओं की नवीन शिक्षा पद्धति और वैज्ञानिक आविष्कारों से हिन्दी साहित्य भी अछूता नहीं रहा। परिस्थिति बदली साहित्य में नवीन गद्य प्रेरणा मार्ग प्रशस्त हो गया। खड़ी बोली की गद्य रचनाओं में परिवर्तन एवं नई प्रवृत्तियों का समावेश स्वाभाविकता से हो गया। जिसने हिन्दी - साहित्य में एक नये युग का सूत्रपात किया। हिन्दी साहित्य के लिए बीसवीं शदी महत्वपूर्ण रही। मध्यकालीन भारतीय संस्कृति ब्रिटिश शासन में क्षीण हो चुकी थी। "अंग्रेजी शिक्षा ने शिक्षित और जन - साधारण में अन्तर खड़ा कर दिया।"[6]

---

[5] शर्मा, सुरभि. *रांगेय राघव के उपन्यासों में नारी मुक्ति की अवधारणा*, हिंदी बुक सेंटर, 2023।

[6] चौधरी, मीरा. *हिंदी कथा साहित्य में नारीवाद का उदय*, साहित्य भवन, 2020।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 12, ISSUE 2, (April-June, 2024)

इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि बदलते समाज को पहचानने, समयानुसार अपनेको ढालने और चेतना शक्ति जाग्रत होने में अहम् भूमिका शिक्षा की है। समाज सुधारकों नेएवं नारी मुक्ति आंदोलनकर्ताओं ने भी स्वीकारकिया कि शिक्षा से बढ़कर नारी स्वतंत्रता के लिए कोई अस्त्र नहीं है। इस कारण शिक्षा प्राप्ति द्वारा चेतन नारी का चित्रण साहित्य में हुआ है। इसी प्रकार रांगेय राघव के घरौंदे की लवंग, लीला, रानी और इंदिरा, नारी पात्र हैं।